सहायक शिक्षक ने नवाचार से बदली विद्यालय की सूरत

सीहोर। छात्रों को पढ़ाते हुए शिक्षक सुरेंद्र सिंह कचनेरिया । ● नवदुनिया

सीहोर। नवदुनिया प्रतिनिधि

ग्राम आलमपुरा के शासकीय प्राथमिक शाला के सहायक शिक्षक सुरेंद्र सिंह कचनेरिया ने दूसरों की अंधेरी जिंदगी को रोशन करने के लिए आंखें दान करने का फैसला लिया है। रविवार को उन्होंने अपने जन्मदिन घोषणा पत्र भरकर जमा किया। उन्होंने कहा कि मेरी मृत्यु के बाद मेरे नेत्र जिला अस्पताल या रोटरी क्लब, लायंस क्लब या अन्य स्वयंसेवी संस्थाओं को दान कर दिए जाएं। मेरी आंखें कार्निया प्रत्यारोपण अथवा अन्धत्व निवारण नेत्र रोग और चिकित्सा संशोधन के लिए उपयोगी हो ऐसी मेरी इच्छा थी। अब परिजन इच्छा को पूरा करेंगे।

बता दें कि उत्कृष्ट शिक्षक कचनेरिया को अभिलेखों के उत्तम रखरखाब और बेहतरीन शिक्षण कला के लिए वर्ष 2016 में स्वतंत्रता दिवस समारोह में पूर्व पीडब्ल्यूडी मंत्री रामपाल सिंह द्वारा सम्मानित किया जा चुका है। साथ ही पूर्व प्रमुख सचिव शिक्षा विभाग कल्पना श्रीवास्तव ने निरीक्षण के दौरान स्कूल

ग्राम आलमपुरा के शिक्षक सुरेंद्र सिंह ने की नेत्रदान की घोषणा

प्रबंधन की प्रशंसा कर चुकी हैं। उत्कृष्ट कार्यों के लिए पूर्व विधायक शैलेंद्र पटेल भी सम्मानित कर चुके हैं।

स्कूल की स्वयं सफाई करते हैं कचनेरिया

आलमपुरा के ग्रामीणों के मुताबिक शिक्षक कचनेरिया की जागरुकता और लगातार काम करने की क्षमता ने वर्ष 1955 में बने स्कूल के पुराने भवन को भी सवार दिया है। वह स्वयं स्कूल, शौचालय आदि की साफ- सफाई करते हैं। स्कूल में लगभग सभी शैक्षणिक गतिविधियों के साथ बच्चों को खेल अभ्यास, पर्यावरण सुरक्षा, पौधारोपण, स्वच्छता की भी शिक्षा दी जाती रही है। शिक्षक की पहल पर स्कूल में माध्या- भोजन के पहले बच्चों द्वारा प्रेरणादायी गीत गाए जाते हैं। पढ़ाई के माहौल मिलने से बच्चे उत्साह के साथ स्कूल पहुंचते हैं। साथ ही यहां के विद्यार्थी पढ़ाई में भी अव्वल हैं।

शिक्षक को अधिकारी कर्मचारियों ने दी आर्थिक सहायता

भुआबिछिया। नईदुनिया न्यूज

विकासखंड बिछिया में पदस्थ चोखेलाल धुर्वे संविदा शिक्षक वर्ग 02 स्कूल कोको में पदस्थ है। सड़क दुर्घटना में पैर फैक्चर हो जाने के कारण अपना सही ढंग से इलाज नही करवा पा रहे थे। चूंकि अल्प वेतन भोगी होने के कारण एवं एरियर्स का भुगतान आवंटन न होने के कारण इलाज नही हो पा रहा था। इसे देखते हुए आजाद अध्यापक संघ के जिला अध्यक्ष संतोष सोनी की पहल पर कार्यालय विकासखंड शिक्षा अधिकारी एजे अहलूवालिया से चर्चा की। जिसकी जानकारी स्टाप के अन्य कर्मचारियों को लगी और आनन फानन में बीआरसी एलसी मेश्राम सहित अधिकारियों, कर्मचारियों के सहयोग से पचपन हजार रुपए की राशि एकत्रित कर चोखेलाल धुर्वे को नगद प्रदान की गई ताकी अपना इलाज करवा सके।

भुआबिछिया। राशि सौपते अधिकारी कर्मचारी। ● **नईदुनिया**

ये हैं 80 साल की छात्रा...मोतियाबिंद-कैंसर के बावजूद कर दिखाई पीएचडी

मंडे पॉजिटिव ■ सेवानिवृत्त शिक्षिका को पढ़ाई की ऐसी ललक, संस्कृत में पीएचडी के बाद अब इंजीनियरिंग करना चाहती हैं

राजेश पांचाल | उज्जैन

यह हैं 80 वर्षीय डॉ. शशिकला रावल। अंग्रेजी की टीचर रही। 2002 में सेवानिवृत्त। चाहती तो पेंशन के बलबूते आराम से बाकी जिंदगी गुजार सकती थीं लेकिन उन्होंने एक अलग राह चुनी। वह थी नए सिरे से पढ़ाई करने की। 2011 में ज्योतिष में एमए किया। 2013 में पीएचडी की प्रवेश परीक्षा दी। इसी बीच उन्हें ब्रेस्ट कैंसर हो गया। दो साल उपचार में गुजर गए। ठीक हुई तो फिर से पीएचडी की तैयारी में जुट गईं। 2016 में हाथ में फ्रैक्चर हो गया। उससे जैसे-तैसे उभरी ही थी कि 2017 में दोनों आंखों में मोतियाबिंद हो गया। ऑपरेशन के बाद डॉक्टर ने कहा- ऐसा काम न करें, जिससे आंखों पर असर पड़े। उनके परामर्श को नजरअंदाज करते हुए 2018 में पीएचडी थीसिस सब्मिट की। उन्होंने महर्षि पाणिनी संस्कृत एवं वैदिक विवि के पूर्व कुलपति डॉ. मिथिलाप्रसाद त्रिपाठी के मार्गदर्शन में 404 पेज की पीएचडी थीसिस पूरी की। विषय है- बृहत्संहिता के दर्पण में सामाजिक जीवन का बिंब। वे अपने परिवार में पीएचडी करने वाली अकेली हैं।

पिता दामोदर और माता हेमकांता मेहता की सबसे बड़ी संतान हैं शशिकला। जन्म से 16 साल तक सब ठीक चलता रहा। पिता डेरोल, गुजरात में रेलवे में थे। पिता के देहांत के बाद परिवार उज्जैन शिफ्ट हो गया। 1957 में उन्होंने उज्जैन में शिक्षा विभाग में बतौर एलडीसी नौकरी शुरू की। तब वे 17 साल की थीं। उसके बाद यूडीसी और सिवनी में लेक्चरर भी रहीं। 1961 में जीडीसी की पहली बैच की छात्रा बनी। 1967 में अंग्रेजी में एमए किया। बचपन से संस्कृत में रुचि थी, इसलिए संस्कृत में पढ़ाई जारी रखी। उन्होंने संस्कृत में शास्त्री, साहित्य रत्न और कोविद भी किया। 2007 में उनके पति डॉ.अनिल कुमार रावल भी साथ छोड़ गए।

डॉ. शशिकला रावल।

कविता के साथ संस्कृत में नाटक भी लिखती हैं

डॉ.रावल के संस्कृत में 15 लेख देश के विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुके हैं। इसके अलावा वे संस्कृत में कविता और नाटक भी लिखती हैं। वे बताती हैं कि सराफा स्कूल में पढ़ाने के दौरान 2012 में उन्होंने संघे शक्ति कलियुगे नाटक लिखा। उसे तैयार भी कराया। जिला, संभाग स्तर पर सफलता के बाद उसे मप्र में पहला स्थान मिला। उनके 14 शोधपत्र भी प्रकाशित हो चुके हैं। वे श्री कुल्लुका विक्रमादित्य पंचांग के संपादक मंडल की सदस्य हैं।

पोते से कहा- प्रोजेक्ट हो तो बताना, मैं भी काम करूंगी

डॉ. रावल के परिवार में बेटा हेमंत और पुत्रवधु श्वेता के साथ एक पोता मोहक भी है, जो पुणे में इंजीनियरिंग के फाइनल ईयर में है। दादी को पीएचडी की उपाधि मिलने पर जब मोहक ने शुभकामनाएं दी तो उन्होंने कहा- कोई प्रोजेक्ट हो तो बताना, मैं भी काम करूंगी। इसके अलावा वे दस साल से नेचरोपैथी की कक्षाएं ले रही हैं। उन्होंने संस्कृत और अंग्रेजी के लिए अपने घर पर सैकड़ों बच्चों का निःशुल्क शिक्षण भी किया।